

HINDI FILE



DREAM
FOR NATION



DARE
TO SERVE



DELIVER
WITH INTEGRITY

DAILY PRACTICE QUESTIONS

BEST FOR UPSC | UP PCS EXAM

DATE : **SEPTEMBER 11, 2026**



Comprehensive
Coverage



Exam-Focused
Analysis



Concept Clarity
& Insights



Practice MCQs
with Explanation



Daily Updates,
Better Results



CONTACT INFO:

+91 92896 33341 | +91 96679 33341



EMAIL ID:

info@sixsigmaias.com



WEB PAGE:

www.sixsigmaias.com



ADDRESS:

C-6, GROUND FLOOR, SECTOR 2,
NEAR SECTOR 15 METRO STATION, NOIDA – 201301, UTTAR PRADESH

दैनिक अभ्यास प्रश्न - स्थैतिक भाग से

प्रश्न 1. पृथ्वी के वायुमंडल की उत्पत्ति और विकास के संबंध में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:

1. पृथ्वी के वायुमंडल की वर्तमान संरचना सौर नेबुलर कैप्चर (solar nebular capture) के बजाय मुख्य रूप से पृथ्वी के आंतरिक भाग की डीगैसिंग (degassing) का परिणाम है।
2. महान ऑक्सीकरण घटना (Great Oxidation Event) वायुमंडल से मीथेन के पूर्ण विलोपन के साथ हुई थी।

उपरोक्त में से कितने कथन सही हैं? (a) केवल एक (b) दोनों (c) कोई नहीं (d) उपलब्ध साक्ष्यों से निर्धारित नहीं किया जा सकता

उत्तर: (a)

स्पष्टीकरण:

- कथन 1 सही है। पृथ्वी का प्राथमिक वायुमंडल (हाइड्रोजन और हीलियम) शुरुआत में ही नष्ट हो गया था, और वर्तमान वायुमंडल मुख्य रूप से ज्वालामुखीय डीगैसिंग (द्वितीयक वायुमंडल) के माध्यम से बना था।
- कथन 2 गलत है। महान ऑक्सीकरण घटना (~2.4 अरब साल पहले) के दौरान, ऑक्सीजन के स्तर में काफी वृद्धि हुई थी, लेकिन मीथेन पूरी तरह से गायब नहीं हुई थी; इसमें भारी गिरावट आई थी लेकिन यह कम सांद्रता में बनी रही। 'पूर्ण विलोपन' वैज्ञानिक रूप से गलत है। इसलिए, केवल एक कथन सही है।

प्रश्न 2. निम्नलिखित में से कौन सा पृथ्वी पर सूर्यातप (insolation) की अक्षांशीय भिन्नता को सबसे अच्छी तरह से समझाता है? (a) पृथ्वी के घूर्णन की विभेदक गति (Differential speed) (b) पृथ्वी के अक्ष का झुकाव और पृथ्वी की वक्रता (c) भूमि और समुद्र का असमान वितरण (d) वायुदाब पेटियों का मौसमी प्रवास

उत्तर: (b)

स्पष्टीकरण: सूर्यातप की अक्षांशीय भिन्नता मौलिक रूप से सौर किरणों के आपतन कोण (angle of incidence) द्वारा नियंत्रित होती है, जो पृथ्वी के अक्षीय झुकाव ($23\frac{1}{2}^\circ$) और इसके गोलाकार आकार पर

निर्भर करती है। घूर्णन की गति दिन-रात की अवधि को प्रभावित करती है, लेकिन अक्षांशीय ऊर्जा प्राप्ति को नहीं। भूमि-समुद्र वितरण और वायुदाब पेटियाँ सूर्यातप भिन्नता के परिणाम हैं, कारण नहीं।

प्रश्न 3. प्लेट विवर्तनिकी (plate tectonics) के संबंध में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:

1. रूपांतर प्लेट सीमाओं (Transform plate boundaries) का संबंध न तो स्थलमंडल के निर्माण से है और न ही विनाश से।
2. दुनिया के अधिकांश गहरे केंद्र वाले भूकंप (deep-focus earthquakes) अभिसरण प्लेट सीमाओं (convergent plate boundaries) के साथ आते हैं।
3. उच्च घनत्व के कारण महासागरीय प्लेटें हमेशा महाद्वीपीय प्लेटों के नीचे दब (subducted) जाती हैं।

उपरोक्त में से कितने कथन सही हैं? (a) केवल एक (b) केवल दो (c) तीनों (d) कोई नहीं

उत्तर: (b)

स्पष्टीकरण:

- **कथन 1 सही है।** रूपांतर सीमाओं में स्थलमंडल की हानि या लाभ के बिना पार्श्व गति (lateral movement) शामिल होती है।
- **कथन 2 सही है।** गहरे केंद्र वाले भूकंप (300-700 किमी) अभिसरण सीमाओं पर सबडक्शन ज़ोन की विशेषता हैं।
- **कथन 3 गलत है।** हालांकि महासागरीय प्लेटें सघन होती हैं, लेकिन सबडक्शन सापेक्ष घनत्व और आयु पर निर्भर करता है; महासागरीय-महासागरीय सबडक्शन भी सामान्य है। इसलिए, केवल दो कथन सही हैं।

प्रश्न 4. भू-आकृतिक प्रक्रियाओं (geomorphic processes) के संबंध में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:

1. अपक्षय (Weathering) व्यापक क्षरण (mass wasting) के लिए एक पूर्व शर्त है।
2. बहता पानी वेग के आधार पर अपरदनात्मक (erosional) और निक्षेपणात्मक (depositional) दोनों एजेंट के रूप में कार्य करता है।
3. रासायनिक अपक्षय ठंडी और शुष्क जलवायु में अधिक प्रभावी होता है।

4. हिमनदों (glaciers) द्वारा निक्षेपण हमेशा स्तरित भू-आकृतियों (stratified landforms) का निर्माण करता है।

उपरोक्त में से कितने कथन सही हैं? (a) केवल एक (b) केवल दो (c) केवल तीन (d) सभी चार

उत्तर: (b)

स्पष्टीकरण:

- कथन 1 सही है। अपक्षय चट्टान की संरचना को कमजोर करता है, जिससे व्यापक क्षरण (mass wasting) की सुविधा होती है।
- कथन 2 सही है। उच्च वेग अपरदन का कारण बनता है; कम वेग से निक्षेपण (deposition) होता है।
- कथन 3 गलत है। रासायनिक अपक्षय गर्म और आर्द्र जलवायु में सबसे प्रभावी होता है।
- कथन 4 गलत है। हिमनद निक्षेप (टिल्ट - till) आमतौर पर स्तरित नहीं होते (unstratified) हैं। इसलिए, केवल दो कथन सही हैं।

प्रश्न 5. अभिकथन - कारण प्रकार -

अभिकथन (A): उष्णकटिबंधीय क्षेत्रों में मृदा परिच्छेदिका (soil profiles) अक्सर लोहा और एल्युमीनियम ऑक्साइड से समृद्ध एक मोटा संस्तर (horizon) दिखाती हैं। कारण 1 (R1): उच्च तापमान और भारी वर्षा रासायनिक अपक्षय और लीचिंग (leaching) को बढ़ाते हैं। कारण 2 (R2): तीव्र यांत्रिक अपक्षय खनिजों की नीचे की ओर गति को रोकता है।

निम्नलिखित में से कौन सा सही है? (a) A सही है; R1 सही है और A की व्याख्या करता है; R2 गलत है (b) A सही है; R1 और R2 दोनों सही हैं, लेकिन केवल R1, A की व्याख्या करता है (c) A सही है; R1 गलत है; R2 सही है (d) A गलत है; R1 सही है

उत्तर: (a)

स्पष्टीकरण:

- अभिकथन (A) सही है—अत्यधिक लीचिंग के कारण उष्णकटिबंधीय मिट्टी (लैटराइट मिट्टी) लोहा और एल्युमीनियम ऑक्साइड से समृद्ध होती है।
- कारण 1 (R1) सही है और सीधे अभिकथन की व्याख्या करता है: उच्च वर्षा और तापमान रासायनिक अपक्षय और सिलिका को हटाने की प्रक्रिया को तेज करते हैं।

- **कारण 2 (R2) गलत है** क्योंकि यांत्रिक अपक्षय खनिज लीचिंग को नहीं रोकता है; वास्तव में, उष्णकटिबंधीय क्षेत्रों में रासायनिक प्रक्रियाएं प्रमुख होती हैं। इसलिए, विकल्प (a) सही है।

दैनिक अभ्यास प्रश्न - करंट अफेयर्स अनुभाग से

प्रश्न 1. हाल के आर्थिक और तकनीकी विकास के संदर्भ में चांदी (सिल्वर) धातु के संबंध में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:

1. सोने के विपरीत, चांदी में निवेश मांग की तुलना में औद्योगिक मांग की लोच (elasticity) अधिक होती है।
2. चांदी की कीमतों में उतार-चढ़ाव (volatility) इसके विविध औद्योगिक उपयोग के कारण सोने की तुलना में संरचनात्मक रूप से कम है।

उपरोक्त में से कितने कथन सही हैं?

- (a) केवल एक
- (b) दोनों
- (c) कोई नहीं
- (d) निर्धारित नहीं किया जा सकता

उत्तर: (a)

स्पष्टीकरण:

- **कथन 1 सही है।** चांदी की पर्याप्त औद्योगिक मांग (इलेक्ट्रॉनिक्स, फोटोवोल्टिक, चिकित्सा उपकरण) है, जो इसकी मांग को आर्थिक चक्रों के प्रति अधिक संवेदनशील बनाती है।
- **कथन 2 गलत है।** विविध उपयोग के बावजूद, चांदी सोने की तुलना में अधिक अस्थिर है क्योंकि बाजार की गहराई (market depth) कम है और यह कमोडिटी तथा कीमती धातु दोनों चक्रों से प्रभावित होती है। इसलिए, केवल एक कथन सही है।

प्रश्न 2. इंटरनेट गवर्नेंस इंटरनेशिप एंड कैपेसिटी बिल्डिंग स्कीम (IGICBS) का मुख्य उद्देश्य क्या है?

- (a) सरकारी नेटवर्क के लिए साइबर सुरक्षा उपकरण विकसित करना
- (b) इंटरनेट प्रोटोकॉल के लिए तकनीकी मानक बनाना
- (c) मल्टी-स्टेकहोल्डर इंटरनेट गवर्नेंस प्रक्रियाओं में घरेलू विशेषज्ञता का निर्माण करना
- (d) वैधानिक तंत्र के माध्यम से सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म को विनियमित करना

उत्तर: (c)

स्पष्टीकरण:

IGICBS का ध्यान वैश्विक इंटरनेट गवर्नेंस मंचों (जैसे IGF, ICANN प्रक्रियाएं) में भारतीय हितधारकों की क्षमता निर्माण, प्रदर्शन और भागीदारी पर है, न कि विनियमन या तकनीकी प्रोटोकॉल विकास पर।

प्रश्न 3. आर्टेमिस II (Artemis II) मिशन के संबंध में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:

1. यह आर्टेमिस कार्यक्रम का पहला मानवयुक्त (crewed) मिशन होगा जो पृथ्वी की निचली कक्षा (LEO) से परे यात्रा करेगा।
2. आर्टेमिस I के विपरीत, इसमें चंद्रमा पर उतरने वाला मॉड्यूल (lunar landing module) शामिल है।
3. इसमें स्पेस लॉन्च सिस्टम (SLS) और ओरियन (Orion) अंतरिक्ष यान का उपयोग किया गया है।

उपरोक्त में से कितने कथन सही हैं?

- (a) केवल एक
- (b) केवल दो
- (c) सभी तीन
- (d) कोई नहीं

उत्तर: (b)

स्पष्टीकरण:

- कथन 1 सही है। आर्टेमिस II पृथ्वी की निचली कक्षा (LEO) से आगे जाने वाला पहला मानवयुक्त मिशन है।

- कथन 2 गलत है। आर्टेमिस II में चंद्र लैंडिंग शामिल नहीं है; यह एक चंद्र फ्लाईबाई (lunar flyby) मिशन है।
- कथन 3 सही है। मिशन में SLS और ओरियन का उपयोग किया गया है। अतः, दो कथन सही हैं।

प्रश्न 4. यूनेस्को मीडिया और सूचना साक्षरता (MIL) एलायंस के संबंध में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:

1. यह मीडिया साक्षरता और सूचना साक्षरता को एक एकीकृत योग्यता के रूप में जोड़ने का प्रयास करता है।
2. यह गलत सूचना (misinformation) का मुकाबला करने के लिए एक कानूनी रूप से बाध्यकारी ढांचा है।
3. यह सरकारों, नागरिक समाज, शिक्षा जगत और डिजिटल प्लेटफॉर्म के बीच सहयोग को बढ़ावा देता।

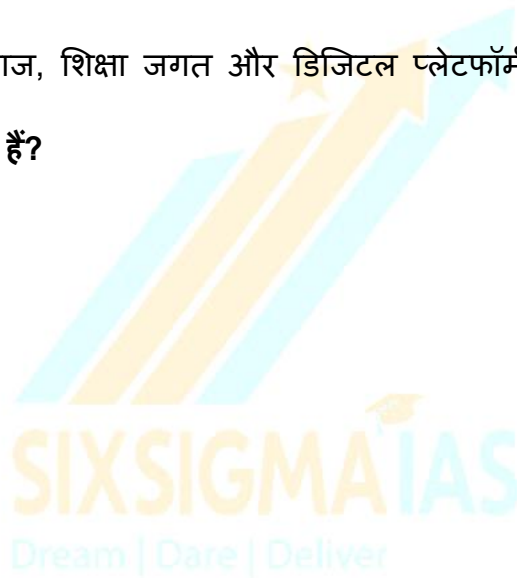
उपरोक्त में से कितने कथन सही हैं?

- (a) केवल एक
- (b) केवल दो
- (c) सभी तीन
- (d) कोई नहीं

उत्तर: (b)

स्पष्टीकरण:

- कथन 1 सही है। MIL मीडिया और सूचना साक्षरता को आपस में जुड़ी दक्षताओं के रूप में मानता है।
- कथन 2 गलत है। यह एलायंस मानदण्डकारी (normative) और सहयोगात्मक है, कानूनी रूप से बाध्यकारी नहीं।
- कथन 3 सही है। यह मल्टी-स्टेकहोल्डर दृष्टिकोण का पालन करता है। इस प्रकार, केवल दो कथन सही हैं।



प्रश्न 5. हाल ही में समाचारों में रहे ऑपरेशन ट्रेशी-1 (Operation Trashi-I) के संबंध में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:

1. इसका उद्देश्य अंतरराष्ट्रीय सीमाओं पर अवैध वन्यजीव तस्करी को रोकना है।
2. इसमें सीमा शुल्क (customs), पुलिस और प्रवर्तन एजेंसियों के बीच समन्वित कार्रवाई शामिल है।
3. यह विशेष रूप से इंटरपोल (INTERPOL) के ढांचे के तहत संचालित किया जाता है।
4. यह केवल समुद्री प्रजातियों पर केंद्रित है।

उपरोक्त में से कितने कथन सही हैं?

- (a) केवल एक
- (b) केवल दो
- (c) केवल तीन
- (d) सभी चार

उत्तर: (b)

स्पष्टीकरण:

- कथन 1 सही है। यह ऑपरेशन अवैध वन्यजीव व्यापार को लक्षित करता है।
- कथन 2 सही है। इसमें बहु-एजेंसी समन्वय शामिल है।
- कथन 3 गलत है। हालांकि वैश्विक सहयोग मौजूद है, लेकिन यह विशेष रूप से केवल इंटरपोल के अधीन नहीं है।
- कथन 4 गलत है। यह स्थलीय और समुद्री दोनों वन्यजीवों को कवर करता है। अतः, दो कथन सही हैं।

प्रश्न 6. कुंभलगढ़ वन्यजीव अभयारण्य के संदर्भ में, निम्नलिखित पर विचार कीजिए:

- (a) यह पूरी तरह से अरावली श्रेणी के पूर्व में स्थित है
- (b) यह राजस्थान में स्थित है और थार मरुस्थल के साथ एक पारिस्थितिक गलियारा (ecological corridor) बनाता है
- (c) यह राजसमंद, पाली और उदयपुर जिलों में स्थित है

(d) यह पश्चिमी घाट जैव विविधता हॉटस्पॉट का हिस्सा है

उत्तर: (c)

स्पष्टीकरण:

कुंभलगढ़ वन्यजीव अभयारण्य राजस्थान के राजसमंद, पाली और उदयपुर जिलों में स्थित है। यह अरावली श्रेणी के भीतर स्थित है, इसके पूर्व में नहीं; इसका थार पारिस्थितिक गलियारे से कोई संबंध नहीं है, और यह पश्चिमी घाट का हिस्सा नहीं है।

दैनिक अभ्यास हेतु विषय आधारित प्रश्न

(GS-1)

प्रश्न 1. चर्चा कीजिए कि भौगोलिक कारकों ने ऐतिहासिक रूप से भारत में सांस्कृतिक विविधता के विकास को कैसे प्रभावित किया है। उपयुक्त उदाहरणों के साथ स्पष्ट कीजिए।

उत्तर: भारत की सांस्कृतिक विविधता इसकी भौतिक भूगोल में गहराई से निहित है, जिसने सदियों से मानवीय अंतःक्रिया के लिए अवरोधक और मार्ग (कंड्यूट) दोनों के रूप में कार्य किया है। उपमहाद्वीप के विविध उच्चावच (relief), जलवायु और नदी प्रणालियों ने बंदोबस्त के पैटर्न, आजीविका और सांस्कृतिक पहचान को आकार दिया है।

हिमालय, जहाँ बड़े पैमाने पर आक्रमणों के खिलाफ एक दुर्जेय प्राकृतिक बाधा के रूप में कार्य करता था, वहीं इसने खैबर और बोलन जैसे दरों के माध्यम से चुनिंदा प्रवेश द्वारों के रूप में भी कार्य किया। इन मार्गों ने सांस्कृतिक आदान-प्रदान को सुगम बनाया, जिसके परिणामस्वरूप उत्तरी भारत की भाषाओं, वास्तुकला और सामाजिक प्रथाओं में इंडो-आर्यन, फारसी और मध्य एशियाई प्रभाव की परतें दिखाई देती हैं।

सिंधु-गंगा-ब्रह्मपुत्र के मैदानों ने, उपजाऊ जलोढ़ मिट्टी और बारहमासी नदियों से संपन्न होने के कारण, घनी कृषि बस्तियों को सक्षम बनाया। इसने हड़प्पा जैसी सभ्यताओं के शुरुआती उदय को जन्म दिया और बाद में मौर्य और गुप्त जैसे साम्राज्यों को बनाए रखा। मैदानों में संचार की सापेक्ष सुगमता ने भाषाई और सांस्कृतिक प्रसार को बढ़ावा दिया, जो इंडो-आर्यन भाषाओं के व्यापक प्रसार की व्याख्या करता है।

इसके विपरीत, प्रायद्वीपीय पठारों और जंगलों ने सापेक्ष अलगाव को बढ़ावा दिया। छोटानागपुर पठार या बस्तर क्षेत्र के आदिवासी समुदायों ने सीमित बाहरी संपर्क के कारण विशिष्ट सामाजिक-सांस्कृतिक

प्रणालियों, कला रूपों और विश्वास संरचनाओं का विकास किया। इसी तरह, पश्चिमी घाट और पूर्वी घाट ने तटीय और पहाड़ी क्षेत्रों में स्थानीय सांस्कृतिक परंपराओं को आकार दिया।

भारत की मानसून प्रणाली ने कृषि कैलेंडर, त्योहारों और अनुष्ठानों को और अधिक प्रभावित किया। ओणम, पोंगल और बैसाखी जैसे फसल उत्सव मानसून की लय के प्रति क्षेत्रीय अनुकूलन को दर्शाते हैं।

इस प्रकार, भारत की सांस्कृतिक विविधता आकस्मिक नहीं है बल्कि एक भौगोलिक परिणाम है—जहाँ भौतिक विशेषताओं ने बहुलवाद पैदा करने के लिए मानवीय एजेंसी के साथ अंतःक्रिया की। भूगोल ने मंच प्रदान किया; इतिहास और समाज ने उस पर प्रदर्शन किया।

(GS-2)

प्रश्न 2. "भारत में न्यायिक निष्कासन एक कठोर कानून है जिसमें एक अंतर्निहित खामी (loophole) है।" न्यायिक स्वतंत्रता और जवाबदेही के संदर्भ में इस कथन का आलोचनात्मक परीक्षण कीजिए।

उत्तर: न्यायिक स्वतंत्रता भारत के संवैधानिक लोकतंत्र का एक आधारस्तंभ है, और संविधान निर्माताओं ने न्यायाधीशों को राजनीतिक दबाव से बचाने के लिए उन्हें पद से हटाना जानबूझकर अत्यंत कठिन बना दिया था। हालांकि, इसी कठोरता ने जवाबदेही में एक कार्यात्मक खामी पैदा कर दी है।

संविधान के अनुच्छेद 124 और 217 के तहत, सर्वोच्च न्यायालय और उच्च न्यायालयों के न्यायाधीशों को केवल संसद द्वारा महाभियोग (impeachment) के माध्यम से हटाया जा सकता है, जिसके लिए दोनों सदनों में विशेष बहुमत की आवश्यकता होती है। यह उच्च सीमा स्वतंत्रता तो सुनिश्चित करती है लेकिन इसने निष्कासन को व्यावहारिक रूप से असंभव बना दिया है—अब तक किसी भी न्यायाधीश पर सफलतापूर्वक महाभियोग नहीं चलाया गया है।

खामी एक प्रभावी मध्यवर्ती अनुशासनात्मक तंत्र की अनुपस्थिति में निहित है। वह कदाचार जो "सिद्ध दुर्यवहार" (proved misbehaviour) के उच्च मानक को पूरा नहीं करता है, अपर्याप्त रूप से संबोधित रह जाता है। कई मामलों में, महाभियोग की कार्यवाही का सामना कर रहे न्यायाधीशों ने प्रक्रिया पूरी होने से पहले ही इस्तीफा दे दिया है, जिससे वे सेवानिवृत्ति के बाद के लाभों को बरकरार रखते हुए औपचारिक जवाबदेही से बच जाते हैं।

इसके अलावा, महाभियोग एक राजनीतिक प्रक्रिया है, न्यायिक नहीं। पार्टी व्हिप, राजनीतिक सौदेबाजी और विधायी व्यवधान अक्सर कार्यवाही को पटरी से उतार देते हैं, जैसा कि पिछले प्रयासों में देखा गया है। यह राजनीतिकरण न्यायिक विश्वसनीयता और सार्वजनिक विश्वास दोनों को कमजोर करता है।

न्यायपालिका की आंतरिक प्रक्रिया (in-house procedure) जैसे संस्थानों में वैधानिक समर्थन और पारदर्शिता की कमी है। हालांकि 'न्यायिक मानक और जवाबदेही विधेयक' जैसे निकायों का प्रस्ताव दिया गया था, लेकिन उन्हें अधिनियमित नहीं किया गया है, जिससे शासन में एक शून्यता बनी हुई है।

इस प्रकार, जबकि न्यायिक निष्कासन कानून बनावट से "कठोर" है, यह प्रवर्तनीयता की संरचनात्मक खामी से ग्रस्त है। समाधान स्वतंत्रता को कम करने में नहीं, बल्कि स्वायत्तता और जवाबदेही को संतुलित करते हुए एक विश्वसनीय, पारदर्शी और संवैधानिक रूप से सुसंगत निगरानी तंत्र बनाने में निहित है।

(GS-3)

प्रश्न 3. भारत में समावेशी आर्थिक विकास को गति देने में बुनियादी ढांचा विकास (infrastructure development) की भूमिका का मूल्यांकन कीजिए। इससे जुड़ी चुनौतियों पर प्रकाश डालिए।

उत्तर: बुनियादी ढांचा आर्थिक विकास की रीढ़ है, जो उत्पादकता, कनेक्टिविटी और बाजार एकीकरण को सक्षम बनाता है। भारत में, समावेशी और सतत विकास प्राप्त करने के लिए भौतिक और डिजिटल बुनियादी ढांचे में निवेश एक केंद्रीय रणनीति रही है।

भारतमाला, सागरमाला, समर्पित फ्रेट कॉरिडोर (DFC) और गति शक्ति जैसी परियोजनाओं ने रसद (logistics) दक्षता में सुधार किया है, लेनदेन की लागत कम की है और क्षेत्रीय कनेक्टिविटी को बढ़ाया है। बेहतर सड़क और रेल नेटवर्क ग्रामीण बाजारों को शहरी केंद्रों के साथ जोड़ते हैं, जिससे किसानों, एमएसएमई (MSMEs) और अनौपचारिक श्रमिकों को व्यापक आर्थिक अवसरों तक पहुंचने में मदद मिलती है।

बुनियादी ढांचा सामाजिक समावेशन में भी महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। विद्युतीकरण, डिजिटल कनेक्टिविटी और जल बुनियादी ढांचा शिक्षा, स्वास्थ्य देखभाल और वित्तीय सेवाओं तक पहुंच बढ़ाते हैं। डिजिटल सार्वजनिक बुनियादी ढांचे के विस्तार ने डीबीटी (DBT) के माध्यम से कल्याणकारी वितरण की अनुमति दी है, जिससे रिसाव (leakages) कम हुआ है और राज्य की क्षमता में सुधार हुआ है।

हालांकि, चुनौतियाँ बनी हुई हैं। भूमि अधिग्रहण में देरी, पर्यावरणीय मंजूरी और लागत में वृद्धि अक्सर परियोजना निष्पादन को धीमा कर देती हैं। बुनियादी ढांचा विकास क्षेत्रीय असमानता को भी बढ़ा सकता है यदि यह पहले से विकसित गलियारों में केंद्रित हो। इसके अलावा, जलवायु संवेदनशीलता बुनियादी ढांचा संपत्तियों की स्थिरता के बारे में चिंताएं पैदा करती है।

वित्तपोषण की बाधाएं, विशेष रूप से राज्य सरकारों के लिए, और कुशल जनशक्ति की आवश्यकता चुनौती को और बढ़ाती हैं। नियामक अनिश्चितता के कारण सार्वजनिक-निजी भागीदारी (PPP) को मिश्रित सफलता मिली है।

इसलिए, जबकि बुनियादी ढांचा एक शक्तिशाली विकास गुणक (growth multiplier) है, इसकी समावेशिता संतुलित क्षेत्रीय योजना, पर्यावरणीय स्थिरता और संस्थागत क्षमता पर निर्भर करती है। बुनियादी ढांचे को केवल निर्माण के रूप में नहीं, बल्कि समान विकास के उपकरण के रूप में देखा जाना चाहिए।

(GS-4)

प्रश्न 4. एक सिविल सेवक के लिए व्यक्तिगत अंतरात्मा और व्यावसायिक कर्तव्य के बीच संतुलन बनाने में शामिल नैतिक चुनौतियों पर चर्चा कीजिए।

उत्तर: सिविल सेवक अक्सर कानून, नैतिकता और जनहित के चौराहे पर काम करते हैं, जिससे नैतिक दुविधाएं अपरिहार्य हो जाती हैं। व्यक्तिगत अंतरात्मा और व्यावसायिक कर्तव्य के बीच तनाव तब उत्पन्न होता है जब कानूनी आदेश नैतिक मूल्यों के साथ संघर्ष करते हैं।

व्यावसायिक कर्तव्य के लिए संवैधानिक सिद्धांतों, कानून के शासन और वरिष्ठों के वैध निर्देशों का पालन आवश्यक है। हालांकि, व्यक्तिगत अंतरात्मा—जो नैतिकता, सहानुभूति और अखंडता से आकार लेती है—उन कार्यों का विरोध कर सकती है जिन्हें अन्यायपूर्ण, भेदभावपूर्ण या हानिकारक माना जाता है।

उदाहरण के लिए, बेदखली के आदेश (eviction order) को लागू करना कानूनी रूप से वैध हो सकता है लेकिन नैतिक रूप से परेशान करने वाला हो सकता है यदि यह कमजोर आबादी को प्रभावित करता है। अंधी आज्ञाकारिता नैतिक परित्याग का जोखिम उठाती है, जबकि अत्यधिक नैतिकता प्रशासनिक अराजकता का जोखिम उठाती है।

नैतिक शासन के लिए मूल्य-आधारित विवेक की आवश्यकता होती है, न कि मूल्य-तटस्थ अनुपालन की। संविधान स्वयं नैतिक मूल्यों—न्याय, गरिमा, समानता—को समाहित करता है जो नैतिक मार्गदर्शन प्रदान करते हैं। असहमति दर्ज करना, लिखित आदेश मांगना, विसलब्लोअर संरक्षण और नैतिक सलाहकार निकाय जैसे तंत्र इस संघर्ष को सुलझाने में मदद करते हैं।

एक सिविल सेवक को व्यक्तिगत पूर्वाग्रह के बजाय संवैधानिक नैतिकता से निर्देशित होकर नैतिक साहस विकसित करना चाहिए। नैतिकता, भावनात्मक बुद्धिमत्ता (emotional intelligence) और केस-आधारित तर्क में प्रशिक्षण नैतिक निर्णय लेने की क्षमता को मजबूत करता है।

इस प्रकार, संतुलन अंतरात्मा के ऊपर कर्तव्य चुनने या इसके विपरीत चुनने में नहीं है, बल्कि शासन को कमजोर किए बिना नैतिक प्रशासन सुनिश्चित करते हुए, दोनों को संवैधानिक मूल्यों और जनहित के साथ संरेखित करने में निहित है।

(Current Affairs)

प्रश्न 5. राष्ट्रीय विधायी सूचकांक (National Legislative Index - NLI) भारत में पारदर्शिता और सहकारी संघवाद में कैसे योगदान देता है? इसके महत्व पर चर्चा कीजिए।

उत्तर: राष्ट्रीय विधायी सूचकांक (NLI) एक सुधार-उन्मुख पहल है जिसका उद्देश्य पूरे भारत में विधायी प्रदर्शन की पारदर्शिता, पहुंच और तुलनात्मक मूल्यांकन को बढ़ाना है। यह अपारदर्शी विधायी कामकाज से साक्ष्य-आधारित लोकतांत्रिक जवाबदेही की ओर बदलाव का प्रतिनिधित्व करता है।

विधायी आउटपुट, उपस्थिति, बहस और समिति की भागीदारी पर व्यवस्थित रूप से डेटा संकलित करके, NLI नागरिकों, शोधकर्ताओं और नीति निर्माताओं को विधायिकाओं का निष्पक्ष मूल्यांकन करने के लिए सशक्त बनाता है। यह सूचित सार्वजनिक चर्चा को बढ़ावा देता है और लोकतांत्रिक निगरानी को मजबूत करता है।

संघीय परिप्रेक्ष्य से, NLI प्रतिस्पर्धी और सहकारी संघवाद को बढ़ावा देता है। राज्य अपनी विधायी दक्षता को दूसरों के मुकाबले बेंचमार्क कर सकते हैं, जिससे संस्थागत सीखने और सर्वोत्तम प्रथाओं को अपनाने को प्रोत्साहन मिलता है। यह केंद्र और राज्यों के बीच सूचना की विषमता (asymmetry) को भी कम करता है।

NLI केवल मात्रात्मक आउटपुट के बजाय गुणात्मक कानून-निर्माण को प्रोत्साहित करके सुशासन में योगदान देता है। समय के साथ, यह विधायिकाओं में क्षमता-निर्माण हस्तक्षेपों, प्रक्रियात्मक सुधारों और डिजिटलीकरण प्रयासों का मार्गदर्शन कर सकता है।

हालांकि, इसकी प्रभावशीलता डेटा सटीकता, संदर्भगत व्याख्या और सरलीकृत रैंकिंग से बचने पर निर्भर करती है। विधायिकाएं विविध कार्य करती हैं जिन्हें केवल संख्याओं के माध्यम से पूरी तरह से नहीं समझा जा सकता है।

अनिवार्य रूप से, NLI कानून-निर्माण को दृश्यमान, तुलनीय और जवाबदेह बनाकर लोकतांत्रिक संस्थाओं को मजबूत करता है, विधायी कामकाज को सहभागी शासन के आदर्शों के साथ संरेखित करता है।